जेद

मुझे मास्को के आठवें और अन्तिम वर्ष मे एक दिन डाक से काले बार्डरों के साथ एक लिफाफा मिला, जिसमे मेरे लिए एक निमंजण तथा मारिया के हॅाथ की लिखी एक चिट्ठी भी थी। जेद हम सबसे नाराज होकर इस संसार को विदा कह गया था। तीन दिन के बाद उसका अन्तिम संस्कार होना था ,जिसमे मेरा जाना सम्भव न था। मुझे एक प्रेक्टिल के लिए दूसरे दिन ही मास्को छोड़ना था। गई रात तक मै मारिया का नम्बर घूमाता रहा, पर उससे मेरा सम्पर्क न हो पाया। फिर मैने उसे एक चिट्ठी लिखी।
छ सप्ताह मै मास्को से करीब सत्तर किलोमीटर दूर एक छोटे से फार्म मे रहा। शायद ही ऐसी कोई शाम रही होगी, जो बगैर जेद की यादों के गुजरी होगी। वहॅा मुझे अपने खाली समयों मे बस उसी की याद आती रहती थी। जेद से मेरा परिचय एक अस्पताल मे हुआ था। अस्पताल से निकलने के बाद करीब डेढ वर्ष तक मेरा उससे और उसके परिवार से सक्रिय सम्पर्क रहा। जेद का अपना जीवन तो कलहपूर्ण था ही, उसके दो विवाहित बेटों का परिवार भी सुखी न था। उसके दोनो बेटे मजदूर थे। गोकि उनकी पत्नियॉ भी काम करती थी, पर वो न अपनी कमाई से खुश थे और न अपने जीवन से। उसका बड़ा बेटा साशा पीने पिलाने मे अपने बाप पर गया था, पर उसकी पत्नी ईरीना बड़ी समझदार और घरेलू औरत थी। इस परिवार मे दो छोटी बेटियॉ भी थीं। जेद का दूसरा बेटा ज्योर्गी समझदार था, पर उसकी पत्नी एक नम्बर की पियक्कड़ थी। ये तीनो परिवार अलकोहल की मजबूत गिरफ्त मे थे। जेद और उसकी पत्नी मारिया के बीच का सम्बन्ध सैंतालीस वर्ष साथ रहने के बाद भी शुष्क न हुआ था, फिर भी मारिया जेद का शराब पीना न रूकवा सकी थी। अब तो वो उसका विरोध तक न करती थी। जेद सुबह से लेकर गई रात तक बिना किसी अन्तराल के शराब पानी की तरह पीता था ,पर मैने उसे न तो कभीं लड़खड़ाते देखा और न तो कभीं हकलाते ही। न तो वो कभी आक्रामक हुआ, न कभीं उसकी भाषा ही अश्लील हुई।
बहत्तर वर्ष की अवस्था मे भी उसमे अजीब सी जिन्दादिली और फूर्ति थी। अपना सारा का सारा पेन्शन वो मारीया के हॅाथ पर रख देता था। मारिया अपने और जेद के पेन्शन से घर के दूसरे खर्चे चलाती थी। इनके पास एक तीन कमरे का मकान था, जहॅा एक कमरे मे उनका बेटा ज्योर्गी अपनी पत्नी लेना के साथ रहता था। किराये का एक भाग ये भी दिया करते थे, पर इनकी रसोई अलग थी। इनके कमरे का दरवाजा हमेशा बन्द ही रहता था।
अचानक एक बार मास्को मे मुझे बड़ी जोरो का बुखार आ गया। मुझे एक इन्फेक्शन हॅास्पीटल मे दाखिला लेना पड़ा। दाखिल होने से पहले पहली बार की तरह मेरे सारे कपड़े, जूते, मोजे उतरवाकर हॅास्पीटल के एक झोले मे सील कर दिये गए। मुझे पहनने के लिए एक हरे रंग का ढीला ढाला कुर्ता और पैजामा दिया गया, साथ मे एक फर की चप्पल भी। फिर एक मोटी सी नर्स मुझे अपने हॅाथ का सहारा देकर एक कमरे मे ले आई, जो दूसरी मंजिल पर था। दो दिनो तक मेरा बुखार न उतरा और न मैने अपना बिस्तर छोड़ा। तीसरे दिन बुखार थोड़ा कम हुआ। जब मेरी ऑख खुली, तब मैने अपने बिस्तर पर बगल मे एक लेडी डाक्टर को बैठे पाया। वो मेरा नब्ज देख रही थी। मै उठने को हुआ, तो उसने इशारे से मना कर दिया। फिर बाद मे उसना अपना परिचय दिया और मुझे बताया कि मुझे मलेरिया हो गया है। इस अस्पताल मे मुझे पूरे छ सप्ताह रूकना पड़ गया। पहले ही दिन मै अपने डाक्टर से इतना घुल मिल गया था, कि बाद के दिनो मे वो अपने घर से मेरे लिए फल वगैरह भी लाने लगी। वो अस्पताल मे भी हर नर्स को मेरा विशेष ख्याल रखने को कह रखी थी। जब वो मुझे देखने आती थी, तो घंटों मेरे पास बैठ जाती थी। बड़ी भव्य औरत थीं वो। उसका नाम ओल्गा वागीरोवना था। अस्पताल की नर्से शिफ्टों मे काम करती थी। मै एक एक को उनके नाम से जानता और पुकारता था। शाम के खाने के बाद मै उनके कैबिन मे जाकर बैठ जाता था और उन्हे इधर उधर के चुटकुले सुनाकर हॅसाता रहता था। कभीं कभीं तो सुबह के चार तक बज जाते थे। ओल्गा की वजह से मेरा जीवन इस अस्पताल मे राजाओं जैसा था, अन्यथा मुझे यहॅा एक नारकीय जीवन भोगना पड़ जाता। अस्पताल के दूसरे मरीजों को समय से कतारों मे लगकर दो वक्त का खाना लेना पड़ता था। उनके सोने जगने उठने बैठने तक के नियमित समय थे। अस्पताल के बाहर निकलने की सभी को मनाही थी। उन्हे अपने बिस्तर भी स्वयम बदलने और ठीक करने पड़ते थे। और तो और यहॅा की लैट्रिने बिल्कुल खुली थीं बिना दीवारों के, बिना दरवाजों के। जब मै पहली बार यहॅा गया तो देखा एक लाईन से दस बारह मरीज टट्टी करने बैठे हैं। सबके ऑख के सामने प्रावदा अखबार तना पड़ा है। बीसों लोग अपने अपने नम्बर का इन्तजार कर रहे हैं और इतने ही लोग खड़े सिगरेटें फूॅके जा रहे है। लैट्रिन हॅाल मे पैर रखने तक की जगह न थी। मै वापस अपने बिस्तर पर आ गया। गई रात तक इस हॅाल का चहल पहल कम न हुआ। इस हॅाल का चहल पहल चौबीस घन्टे बरकरार रहता था। अस्पताल के कमरों और दूसरे हिस्सों मे सिगरेट और शराब प्रतिबन्धित था, फिर अस्पताल से बाहर जाने की भी सभी को मनाही थी। आखिर मरीज जाते भी तो कहॅा जाते! इस लैट्रिन हॅाल से सुरक्षित कोना या कमरा पूरे अस्पताल मे कही था ही नही। इस हाल मे नर्से भी नही आती थी। साले टट्टी और पेशाब का बहाना बनाकर इस हाल मे शराब और सिगरेट पीते रहते थे। इन्हे चौबीस घन्टे इस बात का भी खतरा रहता था कि कोई नर्स कही ओल्गा से उनके बारे मे चुगली न कर दे। फिर तो उन्हे अस्पताल ही छोड़ना पड़ जाएगा। इन मरीजो मे पंचानबे प्रतिशत तो मुझे कहीं से भी बीमार न दिखते थे। उनके लिए ये अस्पताल होटल की तरह नही, स्वर्ग की तरह था। साफ सूथरा बिस्तर, दो वक्त का खाना फिर शराब सिगरेट भी उनके सम्बन्धी और रिश्तेदार दे ही जाते थे। काम से छुट्टी, मुफ्त की तनख्वाह और क्या चाहिये था इन्हे जीवन मे! कईयों के पास तो ओल्गा जाती तक न थी। उसे पता था कि वो उनसे उनका हाल चाल पूछेगी और वो अपना पचपन दर्द गिनवा देंगे। जब ओल्गा पर वाकई नये आने वाले मरीजों का दबाव बढता था, तो उसे दो चार मरीजों को घर भेजना पड़ता था। विदाई का दृश्य बड़ा हृदय विदारक होता था।
दूसरे दिन ओल्गा जब मुझे देखने आई, तब मैने अपना सारा कष्ट्र उसे सविस्तार सुना डाला। मुझे नर्सो के लैट्रिन रूम की चाभी मिल गई। जब मरीजों का खाना बॅट जाता था और नर्से अपने कैबिन मे खाना खाने बैठती थी, तो कोई न कोई आकर मुझे भी इशारा कर जाती थी। मै जब सोता रहता था ,मुझे जगाने कोई भी न आता था। जब मै गई सुबह तक नर्सो के कैबिन मे बैठा उनसे गप्पें मारता रहता था, मुझे सोने के लिए भी कोई न कहता था। मेरा बिस्तर चमकता ही रहता था। कभीं कभीं मुझसे मिलने पंजाब की एक लड़की आती थी, जो मेरे ही यूनिवर्सिटी मे रसियन फिलालाजी पढती थी। उसे वापस छोड़ने मै बस स्टैंड तक जाता था। मुझपर अस्पताल का कोई भी नियम कानून लागू न था। अपने लेडी डॅाक्टर से मै तुम कहके ही बातें करता था। कभीं कभीं मै उसके साथ अस्पताल के कैम्पस मे घूमने भी जाता था और अक्सर उसे बताता भी था कि अस्पताल मे मुझे कोई कष्ट्र नही

है।बस रह रहकर घर की याद आती है।एक बार मैने उससे ये भी कह दिया कि जब वो अपने घर चली जाती है तब मुझे उसकी भी बड़ी याद आती है।मुझे कमरे मे पहुँचा कर उसने एक स्लिप पर अपना प्राइवेट नम्बर मुझे लिखकर दिया फिर मेरे बगल मे बैठकर मेरे कान मे फुसफुसा कर कहीःतुम्हारा जब भी मन करे मुझे फोन करना।मेरा फोन मेरे बेड के पास ही रहता है।जब तुम अच्छे हो जाओगे.तब तुम्हे मै अपने घर पर भी बुलाऊँगी।मेरा पीठ थपथपा कर वो चली गई।

मेरे कमरे मे दूसरे पॅाच मरीज थे.जिनमे से एक का नाम निकोलाई था।उसकी उम्र बहत्तर वर्ष की थी।एक तो उसकी कद छोटी थी.ऊपर से उसके पीठ पर एक कूबड़ भी था।परिचय होने के बाद मै उसे जेद और वो मुझे सीनोक कहके पुकारने लगा।उसके बिस्तर के बगल वाली टेबल खाने पीने के सामानो से भरी रहती थी.जिसपर काफी का एक बड़ा सा थर्मस पड़ा रहता था।जेद से मिलने उसकी पत्नी रोज ही आती थी।जेद खाने के सामानों की तरफ फूटी ऑखो से भी न देखता था.बस काफी की थर्मस खाली करता रहता था।अपनी पत्नी के आने से पहले वो खाने का सारा सामान मेरे टेबल पर रख जाता था.पर अपने थर्मस को वो अपने जान से भी ज्यादे प्यार करता था।जब एक दिन मैने उससे कहाःजेद तुम्हारी उम्र बढ चली है।ढंग से खाया करो।दिन भर काफी पीते रहते हो।कब तक साथ देगा तुम्हारा ये शरीर!जेद ये सुनकर हॅसते हॅसते लोटपोट हो गया।फिर धीरे से मेरे कान मे कहाःसीनोक.ओल्गा के सामने तुम मेरी पोल तो नही खोलोगे!मैने ना मे सिर हिला दिया।

जेद फिर मेरे कान से आ लगाःकॅाफी तो गदहे पीते हैं।तुम्हारी बाबूसका मुझे हर रोज कॅाफी के थर्मस मे वोदका दे जाती है।तुम्हारी ओल्गा को इस बात की भनक तक नही है।मेरी कान वो अपनी थूक से डबाडब भर गया था।

अपनी पत्नी मारिया का एक मिनट भी देर से आना जेद को गवारा नही था।हमारी खिड़की से बस स्टैंड साफ नजर आता था।जेद साढे आठ बजे से ही खिड़की पर पहरा देना शुरू कर देता था।जब तक उसे मारिया आती न दिखती थी.वो बस च्योर्त च्योर्त भुनभुनाता रहता था।

स्वभाव का बड़ा जिन्दादिल था जेद।मुझे वो दिन भर बिना मेरे या अपने उम्र का ख्याल रखते हुए हर तरह के चुटकुले सुनाता रहता था.शाकाहारी से लेकर मांसाहारी तक।

एक दिन शाम के वक्त जेद चुपचाप आकर मेरे बिस्तर के सामने नजरें झुकाए खड़ा हो गया।मैने विनम्र उससे पूछाःक्या बात है जेद!इतने उदास क्यो हो!मुझसे तुम कुछ कहना चाहते हो!

उसने सहमति मे अपना सिर हिलाया।

मै उसके साथ बरामदे मे आ गया और खिड़की से लगे एक बेन्च पर हम साथ साथ बैठ गए।

ःएक घूँट वोदका पीओगे!

ःतुम्हारे लिए कम तो नही पड़ जाएगी!

ःसीनोक.तुम डाक्टर से बात करके कल मेरी छुट्टी करवा दो।मेरे और अपने पेन्शन से मारिया घर के सारे खर्चे चलाती है।उसमे वोदका की कही गुंजायश नही है।ये खर्चा मै खुद ही उठाता हूँ।मै पेशे से बढई हूँ।लोगों के दाचों की मरम्मत करता हूँ।जब काम नही मिलता.तब लबादे पहनकर पुलिसबालो के कुत्तो के सामने खड़ा हो जाता हूँ।जब उन्हे भी मेरी जरूरत नही होती.तब रसोई मे आलू से स्प्रिट बनाता हूँ।यहॅा अस्पताल मे पड़े पड़े मै कब तक सड़ता रहूँगा!वागीरोवना तुम्हे ना नही करेगी।वो तो तुम्हारी निवेस्ता है।

मै तो एकबार सोच मे ही पड़ गया.जेद गिड़गिड़ाए जा रहा था।

जब मैने उससे पूछाःजेद तुम क्या शराब पीना कभी नही छोड़ पाओगे!

ःसीनोक! जिस दिन मैने इसे छोड़ दिया.जिन्दगी मुझे दसविदानिया कह जाएगी।

दूसरे दिन मैने ओल्गा से जेद के बारे मे बात की।जेद शराब पी पीकर अपने लीबर तक गला चुका था.जिसका कोई इलाज न था।ओल्गा जेद को बिल्कुल ही रिलिज नही करना चाहती थी।अब मुझे ओल्गा को जेद के बारे मे सविस्तार बताना पड़ा।मैने उसे जेद के काफी थर्मस के बारे मे भी बता दिया।मेरा ये विश्वास था कि जेद अस्पताल के बाहर शायद दो चार वर्ष और जी लेगा।अस्पताल के अन्दर शायद दो महीने भी नही।

ओल्गा ने जेद को रिलिज कर दिया।जेद को उसके सिविल कपड़े वापस मिले।मै और मारिया मेन गेट के सामने उसका इन्तजार कर रहे थे।जेद उछलता कूदता आया।वो फ्लानेल की एक कमीज अपने पतलून मे उटपटांग तरीके से ठूँस रखा था।उसका काले रंग का ओवरकोट उसके जूते तक लटक रहा था।जेद को पढना लिखना नही आता था।बस स्टैन्ड पर मारिया ने मुझे अपने घर का पता और फोन नम्बर लिख कर दिया और जेद बस यही दुहराये जा रहा थाःअस्पताल से निकलते ही हमारे घर आना।बस आकर स्टैन्ड पर रूक गई.मारिया भी मुझे चूम कर गले से लगाकर बस मे चढ गई.पर जेद मेरा हाथ पकड़े मुझसे आश्वासन पर आश्वासन लिये जा रहा था।बड़े भारी मन से वो बस मे चढा।

जेद के जाने के बाद मै इस अस्पताल मे एक सप्ताह और रहा।जेद की कई बातें मुझे अक्सर याद आती थीं।ओल्गा के एक विशेष अनुमति पर जेद को अस्पताल के केम्पस मे घूमने फिरने की आजादी मिल गई थी।शराब से इतनी आत्मीयता के बावजूद उसमे गजब की फूर्ती थी।वो चलता नही था.कंगारूओं की तरह उछलता ही रहता था।बाहर निकलने से पहले वो चाय का एक पैकेट और एक छोटी सी काली देगजी साथ लेना न भूलता था।रास्ते मे उसे जो भी सूखी लकड़ी मिलती.बटोर लेता था।फिर वो सबकी नजर बचाकर दो ईटों की आग पर अपनी देगजी मे सौ ग्राम काली चाय मिनटों तक उबालता रहता था।अपनी इस चाय को वो चिफिर कहता था।एक बार मैने भी उसकी एक घूँट चिफिर पी थी।तीन दिन तक मै नशे मे रहा।

खाने के लिए मै अस्पताल मे लाईन मे न लगता था.पर जेद लाईन मे सबसे आगे खड़ा रहता था।दवाय दवाय कहके वो अपने प्लेट मे दो मरीजों का खाना डलवा कर भागा भागा मेरे पास आता था।मै उसे मना नही कर पाता था।उसके साथ थोड़ा बहुत खाकर मै नर्सो के कैबिन मे सरक लेता था।हर नर्स से लेकर ओल्गा तक से वो मेरे बारे मे बस यही कहता फिरता था.ये मेरा लड़का है।बड़ी दूर से हमसे मिलने आया है।उसे हमारे यहॅा कोई तकलीफ नही होनी चाहिये।सभी दा दा कह कर मुस्कराती रहती थीं।

मेरे कमरे मे एक अजरबाईजान का मरीज था।उसे मुझे इस अस्पताल मे मिली सहूलियतें पसन्द न थीं।वो मुझसे कहता तो कुछ न था.बस गुस्से से मुझे

रह रहकर घूरता रहता था।जेद ये भॅाप गया और उससे अकारण ही उलझ बैठा और अपनी नाक तुड़वा आया।
जिस दिन मैने अस्पताल छोड़ा,मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मै अपना घर परिवार ही छोड़ रहा होऊँ।मेरे पास नर्सो के दिये कई छोटे बड़े उपहार थे।गुलदस्ते ही गुलदस्ते थे मेरे हॅाथों मे।लाख मना करने के बावजूद ओल्गा मुझे अपनी गाड़ी से मुझे मेरे हॅास्टल तक पहुँचा गई।
अस्पताल से निकलने के बाद मै यूनिवर्सिटी की भाग दौड़ मे व्यस्त हो गया।मेरे पास ओल्गा और जेद दोनो के नम्बर थे,पर मुझे फोन करने का समय ही न मिलता था।अक्सर इन्ही के फोन आते थे और इनका एक ही सवाल हमेशा होता थाःघर पर कब आओगे!एक बार ओल्गा के पति से मुझे पता लगा कि आने वाले शनिवार को ओल्गा का जन्मदिन है।इस शनिवार को मै ऐसे भी इनके घर जाने वाला था,पर मुझे जन्मदिन के बारे मे कुछ पता न था।मै डालरशाप से एक व्हिस्की की बोतल खरीदी और उसे ढंग से रैप किया।फिर ओल्गा के नाम एक सुन्दर सा कार्ड लिखा।ठीक ग्यारह बजे मै ओल्गा से मिलने जा पहुँचा।मुझे देखते ही ओल्गा लपक कर उठी और मेरे पास आई।ड्राईगरूम मेहमानों से खचाखच भरा हुआ था।ओल्गा के माता पिता भी आए हुए थे।मेहमानो मे ज्यादेतर डाक्टर ही थे।ओल्गा का पति भी डाक्टर था।इसके पहले भी मै कई परिवारों मे जा चुका था।एक बात मेरे सामने बिल्कुल स्पष्ट होती जा रही थी कि जीवन स्तर जीवन मे बस पैसों से ही नही आ पाता।उन दिनो सोवियत यूनियन मे एक आम मजदूर की तनख्वाह एक डाक्टर या लेक्चरार से ज्यादे थी,फिर भी वो एक मजदूर की तरह ही रहता था।बात विचार व्यबहार सबकुछ उसका एक मजदूर की तरह होता था।काम के बाद उसके पास सिवाय वोदका के कोई दूसरी व्यस्तता होती ही न थी।
सारे मेहमानो से परिचय करवाने के बाद ओल्गा अपनी कुर्सी खींचकर मेरे समीप आ बैठी।न तो मेरी प्लेट खाली हो पाती थी और न मेरी ग्लास।नाच गानो मे मेरी कोई अभिरूचि न थी,फिर भी ओल्गा के निमंञण पर मुझे उठना ही पड़ता था।जब मुझे ओल्गा के लिए प्रोस्ट बोलना पड़ा,तब मै थोड़ा नशे मे था,फिर भी मुझे कुछ न कुछ बोलना ही था।मै अपना ग्लास थामे खड़ा हुआःमेरी प्यारी ओल्गा,पता नही तुम मुझे क्यों इतना मानती हो!पर मै ये जानता हूँ कि मै तुम्हे क्यों इतना मानता हूँ।शायद समय के साथ सोवियत यूनियन मे मेरे बिताए साढे सात वर्ष थोड़े धूमिल पड़ जॉयेंगे,पर तुम्हारे संग बिताया एक एक पल मै अनमोल मोतियों की तरह संजो कर रखूँगा।पता नही तुम्हारे पति ने तुमसे ये कभी कहा है या नही!पर मै तुमसे कह ही देता हूँ सुन्दर तो तुम हो ही,साथ साथ बड़ी सौम्यता है तुममे।गोकि ये मेरा पॅाचवा ग्लास है और मै ठीक ठाक नशे मे हूँ,फिर भी मै तुम्हारी सौम्यता के नाम पर तुम्हारे लिए पॅाचवे ग्लास का रिस्क उठाने जा रहा हूँ।ईश्वर तुम्हे खुश और स्वस्थ रखे।ड्राईन्ग रूम तालियों से गूँज उठा था।
धीरे धीरे पार्टी खत्म होने को आई।सारे मेहमान विदा लेकर जा चुके थे।ओल्गा जिद किये जा रही थी कि मै वही रूक जाऊँ,पर मै हर हालत मे अपने हॅास्टल वापस लौटना चाहता था।मेरे लाख मना करने के बावजूद वो खाने पीने का ढेर सारा सामान बॅाधे जा रही थी।गाड़ी चलाने की हालत मे न वो थी न उसका पति,फिर भी वो मुझे टैक्सी स्टैन्ड तक साथ साथ छोड़ने आए और टैक्सी ड्राइवर को मेरा पता बताकर उसके हाथ मे बीस रूबल भी पकड़ा दिये।
आगामी पॅाच वर्षो मे मै ओल्गा और उसके पति के जन्मदिन पर उनके पास हमेशा गया।उन्हे फोन तो मै अक्सर ही करता था।
जेद भी अपनी जिद़ पकड़े बैठा था।महीनो मै उसे टालता रहा।उसके पीने पिलाने से मुझे थोड़ी घबराहट होती थी।फिर भी एक शनिवार की शाम को मैने उससे मिलने का वायदा कर ही दिया और उसे एक नियत समय भी दे दिया।जेद मुझे लिवाने मेट्रो स्टेशन तक आया था।मेट्रो रूकने से पहले ही मै उस कूबड़े छोटे कद के जेद को प्लेटफार्म पर चहलकदमी करते देख चुका था।मुझे देखते ही वो मेरी तरफ दौड़ा और दसों बार अपनी एक उँगली उठाकर बुदबुदाता रहा।मैने उसे छ महीनों का इन्तजार जो करवाया था।मेट्रो स्टेशन के बाहर ही एक मागासीन थी,जहॅा से जेद को डबलरोटी खरीदनी थी।मैने डबलरोटी के पैसे चुका दिये,जेद बड़बड़ता रहा।हम आगे बढे।रास्ते मे ही एक शराब की भी दुकान थी।वहॅा उसके कदम थोड़े ढीले पड़ गए।उसके मना करने के बावजूद मैने उसे एक वोदका की बोतल खरीद दी।जेद उसे अपने पलतो की अन्दर वाली जेब मे ठूॅसने लग पड़ा।मारिया मुझसे बड़े स्नेह से मिली।शाम का खाना मैने वहीं खाया।ना नुकूर करने के बावजूद भी मुझे जेद के साथ वोदका पीनी ही पड़ी।इस रात मै वहीं ठहर गया।मारिया ने मेरे लिए ड्राईन्ग रूम के एक सोफे पर मेरा बिस्तर लगा दिया और स्वयम सोने चली गई।जेद ड्राईन्ग रूम मे बैठा अपनी बोतल खाली करता रहा।दूसरे दिन सुबह मेरी मुलाकात जेद के छोटे बेटे ज्योर्गी से हुई।वो स्वयम मुझसे मिलने जेद के ड्राईन्ग रूम मे आया,पर उसकी पत्नी से मिलने मुझे उनके कमरे मे जाना पड़ा।पूरा कमरा पश्चिमी देशों के सामानो से भरा पड़ा था।अपने देश का शायद ही कोई सामान इनके पास था।ऐसे भी उन दिनों वहॅा के जीवन मे पश्चिमी देशों ने काफी उथल पुथल मचा रखा था।अमेरिका,पश्चिमी जर्मनी और जापान की खोखली चकाचौधों के पीछे पूरा देश ही दिशा विहीन हो चला था।ये मंच पर अपने करतब दिखा रहे थे और शेष विश्व इनका दर्शक था और आज तक है।पता नही कब से संस्कृति एक सभ्यता से मार खाती चली आ रही है!कब संस्कृति सभ्यता पर हावी होगी,ये मै नही जानता और न कभीं जान ही पाऊँगा।कब हम अपनी मौलिकता मे अपना सच्चा सौन्दर्य देखेंगे,कब हम अपनी मौलिकता मे अपनी पहचान ढूढेंगे!आदमी तन से नही मन से गरीब या अमीर होता है,कब तक हम इस तथ्य को नकारते रहेगें!
जेद की पेन्शन बेहद कम थी।खाने का अभाव जेद के परिवार मे नही था।इस बात की जेद को परवाह भी न थी।उसे बस एक बात की परवाह थी,बस उसका नशा कभीं न टूटे।दूसरे काम उसे बस अपने नशे की वजह से ढूँढने और करने पड़ते थे।अपने नशे के अलावे जेद की एक और कमजोरी थी,उसकी अपनी दो नातिनें।उनका अभाव जेद से देखा न जाता था।अक्सर जेद एक मोटा लबादा पहनकर पुलिसवालों के कुत्तों के सामने जाकर खड़ा हो जाता था।इन पैसों से वो ज्यादेतर अपने नातिनों के लिए पदारक खरीदता था।
जेद,साशा और लेना के पीने की प्रक्रिया मे रोना धोना एक आम बात होती चली जा रही थी।पता नही पीने के बाद ये किस बात को याद करके रोते थे!क्या रूलाता था इन्हे! कोई सपना या कोई अभाव!इसके अलावे जेद को मैने कभीं आक्रामक न देखा,पर साशा और लेना को प्रायः।साशा की पत्नी ईरीना अपनी बेटियों को लेकर एक कोने मे दुबक कर अपने पति के लात जूते खाती थी।ज्योर्गी का मुँह भी अक्सर सूजा रहता था।
जेद के यहॅा मै जब भी गया,मुझे वहॅा रूकना पड़ गया।अक्सर ज्योर्गी की पत्नी मुझे अपने कमरे मे आने का आमंञण देती थी और अपने पसन्द का गाना लगाकर मुझे क्लोज डान्स के लिए बाध्य करती थी।मुझे बड़ी सर्त्तकता बरतनी पड़ती थी।जेद दवाय दवाय कहके सोने सरक लेता था।ज्योर्गी का भी कहीं कोई पता ठिकाना न होता था।ऐसी ही एक किसी शाम मे लेना की उन्मुक्तता इतनी बढी कि मेरा उससे झगड़ा हो गया।जेद और मारिया

भी जग गए।तमाम विरोधों के बावजूद मै इस परिवार मे कभीं न आने का अडिग फैसला लेकर रात के ग्यारह बजे के आस पास एक टैक्सी लेकर अपने हॅास्टल वापस लौट आया।
दूसरे दिन मारिया का फोन आया।मेरे जाने के बाद जेद अपनी बहू को खरी खोटी सुनाकर ड्राईन्ग रूम मे बैठे अपने बेटे के आने का इन्तजार करता रहा।उसके आते ही जेद उसे दूसरे ही दिन मकान छोड़ने की नोटिश भी दे डाला।ज्योर्गी और लेना के बीच उस रात जमकर झगड़ा हुआ।इस झगड़े को सुलझने मे कई दिन लगे।मारिया की दखल से जेद मान तो गया.पर मैने वहॉ जाना बन्द कर दिया।जेद के फोन आते रहे.मै बहाने पर बहाने बनाता रहा।ऐसा भी नही था कि मुझे जेद की याद न आती हो।बड़ा धुन्ध था जेद के जीवन मे और उसके इर्द गिर्द।अक्सर जेद कम्यून्जि को गालियॉ बकता थाःपच्चास वर्ष लगातार मैने इस देश की सेवा की।मेरे अपने पेन्शन से रोटी और नमक तक का जुगाड़ नही हो पाता है और अगला अपना जबड़ा लटकाये होनेकर और कास्त्रो की जप्फियॉ लेता फिरता है।ब्रेजनेव की वो आए दिन मॉ बहन करता रहता था.जो उसका तकिया कलाम भी था.पर अगर मेरे लिए उसके मुॅह से एक बार भी गलती से योप निकला. तो वो दसों बार माफी मॉगा।
जेद और मारिया के बीच आए दिन किसी न किसी बात पर बहस होती थी.जिसमे जेद उलझना नही चाहता था।वो अपना शापका और मान्टेल लेकर घर से बाहर निकल जाता था।मारिया से झगड़ा करना जेद के लिए अपने भगवान को गाली देने जैसा था।दिन मे नही भी तो वो पच्चासों बार मारिया को ये कहता थाःया लूब्ल्यू तिब्या।वो मारिया को जेवूचका कहके पुकारता था।जेवूचका को मै हिन्दी मे सिर्फ एक अबोध बच्ची के रूप मे अनुवादित कर सकता हूॅ।
अपने प्रेक्टिल के बाद मै अपने हॅास्टल वापस आया।मैने मारिया को फोन किया।दूसरे दिन मुझे उसके साथ जेद की कब्र पर जाना था।गई रात तक मुझे नींद न आई।एक बार जेद को मेरे रूम पार्टनर से मेरे पोलीक्लीनिक मे भरती होने का पता चला।वो भागा दौड़ा मेरे पास आया।मुझे बस हल्का सा बुखार था.पर जेद मेरा हॅाथ थामे मेरे बिस्तर के बगल मे बैठा रहा।उसे जब भी कोई नर्स दिखती.वो गिड़गिड़ाने लग पड़ता.ये मेरा सीनोक है।बड़ी दूर से हमारे पास आया है।इसकी पूरी देख भाल होनी चाहिये।खाने पीने के मामले मे ये बड़ा लापरवाह है।इसे पूछ पूछ कर खिलाया जाना चाहिये।जेद ऑसुओं मे नहाये बैठा था।जाने से पहले जब वो अपनी मान्टेल की जेब से दो सेब निकाल कर मेरे हॅाथो मे ये कह कर धर गया कि सिर्फ मेरी बजह से उसे इस उम्र मे भी इन दो सेवों के लिए चोरी करनी पड़ती है.मेरी ऑखे बह चलीं।
जेद को इस बात की बड़ी तकलीफ थी कि वो मेरी किसी तरह की कोई मदद नही कर पाता है।मेरे बीमार पड़ने पर वो अक्सर नीद मे बड़बड़ाया करता थाःमेरा सीनोक बीमार है।मेरा सीनोक बीमार है।
मै जेद की कब्र पर बैठा था।मेरी दॉयी तरफ एक मामूली सा एपीटैफ खड़ा था.जिसपर बस इतना ही खुदा था निकोलाई सर्गइवीच सर्गएवः उन्नीस सौःउन्नीस सौ अठत्तर।
जेद हम सबसे नाराज होकर हम सबको अकेला छोड़कर चला गया था।वो मेरा सगा नही था और मेरा दोस्त भी नही था।पर वो मेरे लिए सारी दुनिया से लड़ने को तैयार था।एक बार मैने उसे अपने एक घना के लड़के से झगड़े की बात बताई थी।उस दिन से सारे अफ्रिकन उसके दुश्मन थे।उन्हे रास्तों पर ही नही.टेलीविजन पर भी देखते जेद बड़बड़ाने गरियाने लगता था।
पता नही मारिया की कौन सी बात उसे लग गई.वो घर छोड़कर निकल पड़ा।मारिया सोने चली गई।इस बार जेद अपना शापका और पलतो साथ ले जाना भूल गया था।जेद बाहर जाकर एक पार्क मे बैठ गया।इसके पहले कि जेद को कोई देखता या उसका स्वयम का नशा टूटता.उसकी देह जम चुकी थी।मास्को की निर्मम ठंढ को जेद पर कोई दया न आई।परिवार मे पैसों का अभाव था।जेद की लाश क्रेमाटोरियम मे जलाई गई।मारिया को एक छोटे से बर्त्तन मे जेद की थोड़ी सी राख मिली।जेद की इच्छा के विपरीत मारिया एक कब्रगाह मे लड़ झगड़ कर जेद के बर्त्तन गड़वाई और वहॉ एक एपिटैफ भी खड़ा करवाया।ज्योर्गी और लेना अपने नए मकान मे जा चुके थे।मारिया को अपने बेटों से कोई आर्थिक मदद न मिली।वो जेद की कब्र तक देखने न आए।
मै कब्र पर बैठा था और मारिया मेरे सामने।उसका एक हॅाथ मेरे घुटने पर था।हम दोनो रोये चले जा रहे थे।
एपिटैफ के सामने एक गन्दे गुलदस्ते मे कई सूखे टयूलिप्स पड़े थे।गुलदस्ते का पानी काला हो चला था।बड़ी बदबू आ रही थी इस पानी से।पास मे ही एक चॅापा कल और एक डस्टबीन था.जो ऊपर तक सूखे सड़े फूलों और पत्तों से भरा पड़ा था।मै नल पर जाकर गुलदस्ता धोने लगा।मै जितना उसे चमका सकता था चमकाया.फिर उसमे रंग बिरंगे टयूलिप्स सजाकर जेद के एपिटैफ के सामने उसे दुर्राक कहके रख दिया।
जब मै मारिया के साथ एक टैक्सी से वापस लौट रहा था.तब मै सामने वाले शीशे मे अच्छी तरह से देख रहा था कि किस तरह उसके गाल के झुर्रियों को एक मोटे से ऑसू का एक बूंद अपनी सीढियॉ बनाये आहिस्ता आहिस्ता नीचे उतर रहा है।
जेद को मै आज तक नही भूला हूॅ।जब मुझे उसकी याद आती है.तब मेरा सब कुछ अस्त व्यस्त हो जाता है।वो मेरे जीवन मे एक ऐसा जज था.जो मुझे निर्दोष देखने के लिए दुनिया के सारे कानून बदल देने को तैयार बैठा रहता था।

प्रमोद कुमार सिंह